अमरकांत वर्मा का भाषा कर्म

Dr. J. R. Jadav
Associate Professor in Hindi
Smt. B. V. Dhanak College, Bagasara

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। "साहित्य की अभिव्यक्ति का संबंध उसकी वैचारिक कटिबद्धता और भाषा के माध्यम से होने वाले उसके बोध से है। भाषा की विशिष्टता के कारण उनमें नवीन रचनाओं का निर्माण होता है। भाषा किसी भी व्यक्ति को उसके सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश से जोड़ती है। भाषा मानवीय आत्मीय अभिव्यक्ति का साधन है। मानव अपने विचारों को विभिन्न ढंग से व्यक्त करता है जिसमें सबसे सशक्त माध्यम भाषा ही है। भाषा किसी क्षेत्र विशेष की संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाज को भी व्यक्त करती है। भाषा और संस्कृति का अभिन्न (या गहरा) संबंध है।, जब तक हम किसी रचनाकार की भाषा का अध्ययन करते हैं तो वास्तव में हम उसकी सांस्कृतिक चेतना का अनुभव करते हैं। भाषा से ही हम रचनाकार के आंतरिक तथा बाहरी परिवेश का सहज अनुमान लगा सकते हैं।

अमरकांत जी कहते हैं कि-"मैंने कल्पना का बहुत कम सहारा लिया है। वस्तुत घटनाओं को सजा दिया है-जो कुछ परिवर्तन हुआ है, वह भाषा और शैली में ही है।"१ इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि अमरकांत जी ने अपने साहित्य में यथार्थ की कसौटी का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

अमरकांत जी के कथा साहित्य की भाषा:

अमरकांत जी के कथा साहित्य की भाषा सरल, सहज और मध्यम वर्ग की अभिव्यंजना को व्यक्त करती है। अमरकांत जी ने अपने कथा साहित्य में भाषा को अधिक महत्व दिया है। सामान्यतः उनकी भाषा में मध्यम वर्ग के मनोविज्ञान का यथार्थ विश्लेषण देखने को मिलता है किंतु उन्होंने भावनात्मक, पत्र संवाद और मनोविश्लेषणात्मक तत्वों को अपने कथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। अमरकांत जी ने अपनी भाषा में समाज की विविध समस्याओं का वर्णन किया है। साहित्य और विविध भाषा शैली का प्रयोग करते हुए उन्होंने भाषा की समग्रता को पाया है। अमरकांत जी के उपन्यासों के पात्र साधारणतः ग्रामीण कस्बे के निकट हैं। इसलिए उनकी कथाओं में आंचलिक या जनपदीय भाषा शैली का बोध होता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में परिवेश से आधारित पात्रों के अनुरूप भाषा को प्रस्तुत किया है। कथा साहित्य में लखनऊ, इलाहाबाद, गोरखपुर जैसे स्थानों का प्रयोग किया है। इन शहरों की बोली, संस्कृति, मान्यताएं आदि विशेष रूप से कथा साहित्य की भाषा में परिलक्षित किया है। अमरकांत जी ने बलिया और इलाहाबाद की भाषा का विशेष उल्लेख अपनी कथाओं में किया है क्योंकि वे लंबे समय तक इस क्षेत्र में रहे हैं। इसलिए यहां की संस्कृति, भौगोलिक, सामाजिक,आर्थिक स्थिति को भली भांति जानते हैं।

अमरकांत जी की कथा सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप है। अमरकांत जी की कथा भाषा की नई भंगिमाओं की पहचान कराती है। उन्होंने अपनी कृति 'सूखा पत्ता' में भावात्मक भाषा का प्रयोग किया है। इसमें प्रथम खंड में कृष्ण कुमार आत्मकथात्मक शैली में अपने बचपन की घटनाओं के बारे में बताता है। द्वितीय खंड में 'तीन दोस्त की कहानी' है, जो 'खूनी क्रांतिकारी पार्टी' बनाकर देश को स्वतंत्र करने का स्वप्न देखते हैं।

'ग्राम सेविका' उपन्यास में अमरकांत जी ने विवरणात्मक शैली को प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका दमयंती ग्रामीण समाज में बच्चों और महिलाओं को शिक्षित कर उनमें व्याप्त अंधविश्वास और शोषण से

मुक्ति दिलाना चाहती है। वह महिलाओं और बच्चों में शिक्षा के प्रति जागृति लाना चाहती है। इस उपन्यास की विशेषता है कि दमयंती मध्यम वर्ग से संबंधित है और अपनी आजीविका के लिए ग्राम सेविका की नौकरी करती है किंतु नौकरी से ही उसे जीवन का उद्देश्य प्राप्त हो जाता है। ग्रामीण लोगों का मानना है कि पढ़ाई लिखाई किस्मत की बात है दमयंती की बातों को वह किस्मत की बात कह कर नजरअंदाज कर देते थे। एक औरत कहती है कि"मेरे लड़के की तो किस्मत में ही पढ़ना नहीं लिखा है बहिन जी,"२ इस प्रकार अमरकांत जी ने इसमें वार्तालाप भाषा शैली का प्रयोग किया है।

'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में अमरकांत जी ने आजादी के पहले के समय का चरित्र चित्रण किया है। इस उपन्यास की भाषा शैली वर्णनात्मक है। इस क्षेत्र की भाषा पर भी वे विस्तार से अपनी राय रखते हैं। वे लिखते हैं कि"मैं इस क्षेत्र की भाषा की और आपका ध्यान दिलाता हूं।.... यहां की भोजपुरी भाषा में तत्सम शब्दों की भरमार है, देशज शब्द कम है। तत्सम शब्दों को ढाल या तोड़ लिया गया है। सामूहिक रूप से बोलता है कि यहां का हर पुरुष हर स्त्री हर बच्चा। यह प्राचीन गणतंत्र होने की निशानी है।"३

कथा साहित्य के संवादों की भाषा का स्वरूप:

अमरकांत वर्मा के कथा साहित्य में कहानियों और उपन्यासों के मध्य प्रसंग के अनुकूल संवादों को जोड़ने की प्रवृत्ति लक्षित की गई है। जहां लेखक किसी घटना या उससे जुड़ी परिस्थिति अथवा पात्रों के बीच संवाद के आधार पर विस्तार से कुछ कहने से बचता है, वहां वह सांकेतिक का उपयोग करता है। जैसे-

"क्या सोच रहे हैं ? मेघाने पास आकर पूछा। कुछ नहीं। मैंने रुखाई से उत्तर दिया।"४

'एक निर्णायक पत्र' मुख्य रूप से मास्टर कुमार विनय और नीति के बीच की कथा है। इस बीच की कथा को प्रेम कथा कहना ठीक नहीं होगा। विनय कुमार नीति को मन लगाकर प्री-मेडिकल परीक्षा की तैयारी करवाते हैं, वह सफल भी होती है। पढ़ाई करने वह लखनऊ पहुंचकर नाटकीय रूप में उसे अपने होटल के कमरे में लाता है और बात तो ही बातों में कहता है कि, अब यह पाखंड करने लगी? तुम जैसी औरत की इज्जत-आबरू मैं चौपट करके रख दूंगा।"५ फिर वह नीति को पूरी तरह नग्न कर देता है। इस पर नीति रोते हुए कहती है कि,"सर आपको पूरा हक है। इज्जत आबरू, प्राण, सब कुछ मैं आपकोसहर्ष देने तैयार हूं गुरु दक्षिणा के रूप में।"६ अब यहां हमें याद रखना होगा कि अमरकांत जी की प्रेम संबंध कहानियों में नायक हमेशा नायिका से आदर्शवादी, एकनिष्ठ और समर्पित होने की उम्मीद तो करता है, पर उसे इस तरह हासिल करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। साथ ही उसका अपना प्रेम भाव, पारिवारिक दबाव, कुंठा, असंतोष, और ऊंचा उठने की इच्छा और कामुकता के साथ जुड़ रहा है। जहां ऐसा नहीं है, वहां वह एक आदर्शवादी प्रेमी के रूप में सामने आता है और प्रेम के उदास स्वरूप को प्रस्तुत करता है।

समकालीन सामाजिक चेतना की परिचायक शब्दावली:

अमरकांत जी के कथा साहित्य में हिंदी के अतिरिक्त अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग किया है। एक बात और ध्यान देने योग्य है कि अमरकांत जी ने भाषा और शब्द प्रयोग हमेशा अपने साहित्य के कथानक के अनुकूल ही रखा है।

शब्द चयन:

अमरकांत जी ने अपने कथा साहित्य के लिए अलग-अलग शब्दों का चयन किया है, जिससे स्पष्ट होता है कि उनका शब्द ज्ञान विस्तृत और समृद्ध है। उनके कथा साहित्य में कथानक के अनुरूप तत्सम, तद्भव, स्थानीय और हिंदी के अतिरिक्त अरबी, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया है।

- गोविंद स्वरूप गुप्त ने 'जनसाधारण को भाषा का कोश' नामक अपने लेख में कहा है " अमरकांत

जी तत्सम प्रधान लेखक है।"७ अमरकांत जी द्वारा प्रयुक्त शब्दों को यहां वर्गीकरण के आधार पर आसानी से हम समझ सकते हैं।तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द, अरबी फारसी शब्द, अंग्रेजी शब्द, लोकोक्ति तथा मुहावरे तथा भाषा में सृजनात्मक प्रवृत्तियां पाठक तक पहुंचाने के लिए तरह-तरह की शैलियों को अपनाया है। उनकी कहानियों में शैलियों की यह विविधता हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।"

आत्मकथात्मक शैली:

'मकान','गले की जंजीर','लड़की की शादी', आदि कहानियों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि कई संदर्भ लेखक ने खुद लिया है। इन कहानियों में लेखक ही एक पात्र बनकर उपस्थित होते हैं। इसी प्रकार अमरकांत जी ने आत्मकथात्मक शैली में बहुत कहानियों की रचना की है, जिसमें कई कहानी प्रमुख है।

पत्रात्मक शैली:

अमरकांत जी ने पत्र को संदर्भ के अनुसार कहानी में स्थान दिया है। अमरकांत जी की कहानी 'मित्र मिलाप'मे दो मित्र के बीच पत्र व्यवहार के संदर्भ में इस शैली का प्रयोग उन्होंने किया है। शिवनाथ उमाशंकर के नाम पर भेजे गए पत्र को इस रूप में उन्होंने प्रस्तुत किया है-

"प्रिय उमाशंकर,

राम- राम! मेरा यह खत देखकर तुम अचंभा करोगे। मुझे जानकर बहुत खुशी हुई कि दया से तुम मजे में हो,….. शंकर भगवान की दया से सब ठीक है। मेरे साहबजादे सुपरिटेंडेंट है।…. चिट्ठी जरूर लिखना।

तुम्हारा पुराना दोस्त

शिवनाथ

यहां पर लेखक ने पत्रात्मक शैली का प्रयोग संदर्भानुसार करते हुए अमरकांतजी ने कहानी को प्रभावशाली बनाया है।

विवरणात्मक शैली:

अमरकांत जी ने अपनी कहानियों में अलग-अलग शैलियों का प्रयोग किया है कभी-कभी विवरण देने की आवश्यकता पड़ती है।अमरकांत जी की कहानियों में कभी-कभी वातावरण का वर्णन, कभी-कभी व्यक्ति चरित्र का वर्णन भी मिलता है। उनकी अधिकांश कहानियों में बीच-बीच में इस शैली का प्रयोग मिलता है। 'कला प्रेमी'कहानी में सुमेर के क्रियाकलापों का वर्णन अमरकांत जी ने अलग-अलग प्रकार से करने का प्रयास किया है। "यह एक महत्वपूर्ण यात्रा थी। सुमेर ने सवेरे आने की सूचना दी थी पर वह रात वाली ट्रेन से लगभग 10:30 बजे पहुंचा। उसने डिब्बे से ही पजावा के नेरुर की तरह बाहर झांक कर इधर-उधर देखा। फिर अटैची लेकर नीचे उतर गया। उसे एक बार लगा कि कोई उसका….. वह लगभग 35 वर्ष का एक दुबला पतला नौजवान था। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी और खूबसूरत थी.." । शिवानंद कहानी में भी इसका उदाहरण मिलते हैं।

रेखाचित्र या व्यक्ति चरित्र की पद्धति:

अमरकांत जी ने अपने साहित्य में कहानी के सृजन में रेखाचित्र की पद्धति को अपनाया है। कहानी के पात्रों के चरित्रगत एवं रूपगत वर्णन में सहायक सिद्ध हुआ है। ऐसे संदर्भों को पढ़ते वक्त लगेगा कि हम कोई रेखाचित्र पढ़ रहे हैं। देश के लोग, जन मार्गी, काली छाया, आदि कहानियों में इस प्रकार की पद्धति को उन्होंने अपनाया है।

पूर्वदीप्ति शैली:

पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग भी अमरकांत वर्मा ने अपनी रचना प्रक्रिया में किया है। इस पद्धति की एक विशेषता यह है की कहानी कम समय में ही दीर्घकाल की यात्रा संपन्न करती है।

'जन्मार्गी'कहानी में अमरकांत जीने की इस पद्धति का प्रयोग किया है। इस कहानी का आरंभ बलराम का कमरा बंद करके काफी हाउस जाने से होता है। रास्ते में वह अतीत की स्मृति में डूब जाता है।

इस प्रकार अमरकांत जी ने बलराम की स्मृति द्वारा उसके अतीत और प्रेम संबंधों को पाठकों के सम्मुख रखा है।

सांकेतिकता:

यहां पर अमरकांत जी ने कभी-कभी संकेतों के माध्यम से भी अपनी बात करने का प्रयास किया है "मौत का नगर"का यह कथन "वह पतली सड़क विधवा की मांग की तरह सुनी थी "यहां पर लेखक ने भीषण स्थिति की ओर संकेत दिया है। इस प्रकार संकेतिकता का आवश्यक प्रयोग अमरकांत जी ने किया है। आत्मकथात्मक शैली, रेखा चित्र या व्यक्ति चरित्र की पद्धति, पूर्व दीप्ति, पत्रात्मक शैली आदि के प्रयोग द्वारा कहानी को अधिक प्रभावित करने का प्रयास किया है

निष्कर्ष:

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अमरकांत जी की कहानियों और उपन्यासों में भाषा कर्म उसके संवेदना पक्ष की भांति संपन्न है। अमरकांत जी के भाषा कर्म में शब्द प्रयोग, मुहावरे, और लोकोक्तियां, शब्दावली एवं उसमें भिन्न-भिन्न शैलियों का स्वरूप धूल मिल गए हैं। जिससे कथा साहित्य प्राणवान बन गया है। अमरकांत जी ने अपनी भाषा को हल्के हल्के शब्दों से सजाया है। अंग्रेजी भाषा के शब्दों को अपनाते वक्तभी उन्होंने यह सरलता के रूप में बनाने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची:

1. अमरकांत. *सूखा पत्ता*. राजकमल प्रकाशन, 1959, पृ. 21.
2. अमरकांत. *ग्राम सेविका*. राजकमल प्रकाशन, 1970, पृ. 21.
3. कालिया, रवींद्र. *अमरकांत*. 2005-06, पृ. 47.
4. अमरकांत. "पोखरा." *सुख और दुख के साथ*, पृ. 10.
5. अमरकांत. *एक निर्णायक पत्र*, पृ. 39. *(यदि यह कोई कहानी है, तो इसे "एक निर्णायक पत्र" लिखें)*
6. अमरकांत. *एक निर्णायक पत्र*, पृ. 40.
7. गुप्त, गोविंद स्वरूप. "जनसाधारण की भाषा का कोश." *नागरी प्रचारिणी पत्रिका*, 1950.